Item Code: 948 Participant Code: 043

* भूमिका।

* भारत में विदेशी विश्वविद्यालय:- देश का भविष्य।

* भारत में विदेशी विश्वविद्यालय सामने करनेवाले समस्याएँ।

* विदेशी विश्वविद्यालयों की समस्याओं का उपाय और समाधान।

* युवा वर्ग की योगदान और दायित्व।

* सरकार की ज़िम्मेदारियाँ और भूमिका विदेशी विश्वविद्यालयों को बढ़ावा देने में।

* छात्रों एवं विद्यालयों की भूमिका और योगदान विदेशी और भारतीय शिक्षा के तालमेल के लिए।

* उपसंहार।

=) भूमिका

"जब तक भारत दुनिया के सामने खड़ा नहीं होगा। तब तक कोई हमारा आदर नहीं करेगा। इस दुनिया में सिर्फ शक्ति की पूजा होती है। डर का कोई जगह नहीं"।

- ए.पी.जी. अब्दुल कलाम

भारत आज़ादी का 79 वी साल मना रहे हैं। भारत एक विकासशील देश हैं, जो विकास में 132 वी स्थान पर है। 2047 में भारत एक विकसित देश बनने की कोशिश में है। हमारे भारत को पूरी तरह से एक विकसित देश बनने के लिए विदेशी निवेश का अत्यंत आवश्यकता है और, यह निवेश भारत की विशाल और महत्वपूर्ण शिक्षा क्षेत्र में होना चाहिए। जहाँ भारत में 1,047 से अधिक विश्वविद्यालय है। ~~ख~~ इन विश्वविद्यालयों में विदेशी निवेश की ज़रूरत है। विदेशी विश्वविद्यालय देश में कृत्रिम बुद्धिमता की उपयोग बढ़ाते हैं।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തൃശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

Item Code: 948   Participant Code: 043

=> भारत में विदेशी विश्वविद्यालय :- देश का भविष्य ।

"शिक्षा एक शक्तिशाली हथियार है, जिसकी उपयोग से आप दुनिया को बदल सकते हो"।

– नेल्सन मण्डेला

भारत का शिक्षा क्षेत्र एक उभरती क्षेत्र है। जो वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक पहुँच चुका है। जहाँ भारतीय शिक्षा क्षेत्र में विदेशी से लोग आकर निवेश कर रहे हैं, जो देश के शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच को बढ़ा रहे हैं। वर्तमान भारत विदेशी लोग, भारतीय शिक्षा क्षेत्र में अपने निवेश देकर, उनकी संस्कृति और मूल्यों को भारतीय पुस्तकों छाप रहे हैं। जहाँ इसे विदेशी नवाचार, बदलाव और प्रगति को दिखा रहे हैं।

यह भारतीय शिक्षा की समस्याओं को दूर करने की एक बहुत बड़ी हल है। इसे भारत में शिक्षा की क्षेत्र को और भी मज़बूत बना सकते हैं।

=> भारत में विदेशी विश्वविद्यालय सामने करनेवाले समस्याएँ।

भारत में विदेशी विश्वविद्यालय कई तरह की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। जिनमे :
कई विश्वविद्यालयों में केवल उनके ही भाषा होने के वजह से साधारण या भारतीय लोग या बच्चों को पढ़ने और लिखने में मुश्किल हो रहे हैं। जहाँ यह इसके ढाँचे के लिए एक बहुत बड़ा समस्या है।
कई विश्वविद्यालयों में प्रादेशिक संस्कृति को किताबों से निकलने के वजह से छात्रों में सांस्कृतिक मूल्यों की कमी होती है। जो जिसे छात्रों में भारतीय संस्कृतिक की पहुँच कम होते है।

भारतीय विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकों के बजाय उन्हें व्यावसायिक, व्यावहारिक और मूल्याधारक शिक्षा का प्रदान भी करते है। पर अक्सर विदेशी विश्वविद्यालयों में इसकी कमी देख सकते हैं।

⇒ विदेशी विश्वविद्यालयों की समस्याओं का उपाय और समाधान।

"परिवर्तन का रहस्य यह है कि,
हमें अपने पुराने को भूलकर,
नई में अपने ऊर्जा लगाना है"।

विदेशी विश्वविद्यालयों द्वारा कई तरह की समस्याओं का सामना कर रहा है। जहाँ भारत शिक्षा स्तर द्वारा शुरू किए गए "राष्ट्रीय शिक्षा नीति" से हम भारतीय शिक्षा और विदेशी शिक्षा को एक साथ आगे बढ़ा सकता हैं।

भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों को भारतीय शिक्षा के साथ संपुक्त रूप से आगे बढ़ाने के लिए, उनमें भारत की इतिहास, संस्कृति, वेश-भूषा, खाना-पान और कलारूप आदियों को जोड़ सकते है। इसे भारत की शिक्षा क्षेत्र के साथ उसे "विविधताओं में एकता" और वसुधैव कुटुम्बकम् जैसी सोच को भी अभी तक अपने विश्वविद्यालय द्वारा फैला सकते है।

=> युवा वर्ग की योगदान और दायित्व।

"युवा वह होते है जिनके हाथों में शक्ति, पैरों में गति, हृदय में ऊर्जा और आँखों में सपना होते है।" – स्वामी विवेकानन्द।

भारत में 69 प्रतिशत युवा आबादी है, जो देश की भविष्य को उज्वल बनाने की शक्ति है।

इसलिए भारत की युवा आबादी को, विदेशी विश्वविद्याल-यों में अपने संस्कृति को साथ पकड़कर आगे बढ़ना होगा। उन्हें विदेशी विद्यालयों को प्रोत्साहित करने के लिए, वहाँ पर सांस्कृतिक कलारूपों को शामिल करना होगा और इसके साथ ही वहाँ की प्रगति और भारत की संस्कृति को एक साथ आगे बढ़ाना है।

⇒ सरकार की जिम्मेदारियाँ और भूमिका विदेशी विश्वविद्यालयों को बढ़ावा देने में।

"लोकतंत्र जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए शासन है"।

– अब्राहम लिंकन

सरकार को भारत में विदेशी ~~विश्व~~ विश्वविद्यालयों को बढ़ावा देने के लिए, कई सारे ~~योज~~ योजनाएँ और पहलों को लागू करना चाहिए।

सरकार को पी.एम.श्री.स्कूल, डिजिटल शिक्षा, मेकइन इंडिया जैसे परियोजनाओं से भारत में उपलब्धित विदेशी शिक्षा को आवश्यक सुविधाएँ और संसाधनों का प्रदान करना चाहिए।

अगर नवभारत जैसी कल्पना को साकार करना है तो, भारतीय सरकार को विदेशी विद्यालयों में आवश्यक बुनियादी ढाँचे प्रदान करना चाहिए और उस के साथ, भारत के ग्रामीण से लेकर शहरों की प्रादेशिक और प्राथमिक शिक्षा के बारे में जानकर, उस के बारे में पढ़कर, विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए रास्ता तैयार करना होगा। विदेशी विश्वविद्यालयों की मदद, भारतीय शिक्षा क्षेत्र सामने करनेवाले उच्च ड्रॉप उट दर, प्रतिभा पलायन, भेदभाव, जैसे समस्याओं के लिए उपाय और समाधान भी ला सकते हैं।

Item Code: 948 Participant Code: 043

=> छात्रों एवं विद्यालयों की भूमिका और योगदान (विदेशी और भारतीय शिक्षा के तालमेल के लिए)

"बच्चे वह चट्टान है, जिनपर हमारा भविष्य निर्मित होता है। एक राष्ट्र के रूप में से वह सब से संपत्ति है"।

- नेलसन मण्डेला

भारत के विश्वविद्यालयों में भारत की प्रमुख जैसे ~~हिन्~~ हिन्दी, मलयालम आदि ~~क~~ का पुस्तक होना चाहिए और भारत के विश्वविद्यालयों में अंग्रेज़ी भाषा का इस्तामाल करना भी चाहिए। इसे भारत में अंग्रेज़ी साक्षरता दर को बढ़ा सकते हैं उसके साथ ही साथ भारतीय और विदेशी विश्वविद्यालयों के बीच प्रतियोगियता, चर्चा, लेन-देन कर सकते हैं। इसे दोनों को क्षेत्र को फायदा ही होगा। उसके साथ ही छात्रों को अपने समुदाय और विश्वविद्यालयों में इस विषय के प्रति पोस्टर, मंचीकरण, संगोष्ठी, तैयार करके, इसके समस्या और गुणों के बारे में चर्चा करना है।

=> उपसंहार

"विचार बदलो,
संसार अपने आप बदल जाएगा"।
- महात्मा गाँधी

भारत में विदेशी विश्वविद्यालय एक दो-धार वाली तलवार है। इसका गुण भी है और दोष भी। जहाँ अगर सरकार ईमानदारी और जागरूकता के साथ आगे बढ़े तो, भारतीय शिक्षा क्षेत्र में विदेशी शिक्षा का संग्राम कर सकते है। विद्यालयों में शिक्षा से छात्रों में आत्मविश्वास, धैर्य और जीवन मूल्या जैसी गुणवत्ता कौ प्रदान करना चाहिए। बच्चों को विदेशी विश्वविद्यालयों पढ़कर अपनी संस्कृति की जड़ नहीं भूलना चाहिए। भारतीय शिक्षा क्षेत्र की भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए सभी लोगों एक मन और दिल से परिश्रम करना होगा। विदेशी विश्वविद्यालयों के मदद से भारत के छात्रों के जीवन नई अवसर, कई सारे सपने और बुनियादी आवश्यकों का प्रदान कर सकता है।

भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहित करने के लिए जागरूकता की ज़रूरत है जहाँ, जागरूकता से विदेशी विद्या. विश्वविद्यालयों से भारत ~~में~~ के शिक्षा प्रणाली को सशक्त, सकारात्मक और रचनात्मक बना सकते है, और इसके साथ ही भारत के आर्थिक, नैतिक, और सामाजिक क्षेत्रों में भी बदलाव ला सकते है।